अध्ययन सामग्री -

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातक खण्ड II

प्रश्न पत्र - अनिवार्य पेपर (हिन्दी रचना)

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

'उत्तर रामचरित' काव्य से संबंधित प्रश्नोत्तर।

Scanned with CamScanner

प्रश्न:- "उत्तर सीता चरित" के आधार पर सीता और विरजा के संवादों को अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर:- संसार की महान से महान रचना का प्राण तत्व उसका संवाद होता है। इसके द्वारा किसी रचना के कथा वस्तु में नाटकीयता का समावेश होता है। इसके साथ ही कथा में गतिशीलता आती है। रचनाकार संवाद के द्वारा अपने उद्देश्यों को भी बखूबी प्रकट कर देता है, इस तल पर कलन्दर सिंह केसरी का "उत्तर सीता चरित" काव्य के सीता विरजा संवाद में आशातीत सफलता मिली है।

प्रस्तुत काव्य में सीता विरजा संवाद की योजना अनेक सर्गों में उपलब्ध है। सीता और विरजा संवाद में सहजता और स्वाभाविकता बनी रहे इसका पूरा ख्याल रखा गया है। सीता विरजा संवाद की सबसे बड़ी खूबी यह है कि दोनों के संबंध सहज व सुमधुर है। सीता ~~विजर~~ विरजा को बहन और सखी मान चुकी है। ग्रंथ के प्रथम सर्ग में विरजा ने लव कुश की उदासी का कारण पूछा, तब सीता कहती है कि ये दोनों इसलिए उदास है क्योंकि इनका पिंजड़ा खाली है। पिंजरे के सुग्गी को मैंने स्वतंत्र कर दी और वह अपने प्रिय से जा मिली है। इसके उपरान्त सीता ने अपने बचपन की स्मृतियाँ सुनाई। राजा जनक और जनकपुर से जुड़ी अनेक ~~याम~~ यादें तथा एक सुग्गे और सुग्गी की कहानी बतलायी।

सीता अपने बचपन की बातें बताते हुए विरजा से कहती है कि उस समय मैं निश्छल और अल्हड़ थी। पिताजी मुझे बहुत प्यार करते थे। एक बार की घटना है मैं वाटिका में भ्रमण कर रही थी, उसी समय एक सुग्गे और सुग्गी की जोड़ी एक पेड़ पर की

डाल पर बैठे थे और प्रेम-क्रीड़ा में रत थे मैं उन दोनों को देखकर सहज ही मोहित हो गयी और उन्हें प्राप्त करने की तीव्र लालसा मेरे मन में जगी। सुग्गी पकड़ी गई, मैंने उसी पिंजड़े में बंद रखा, क्योंकि मैं खुश थी लेकिन मैं सुग्गी की पीड़ा समझ न सकी। कुछ दिनों बाद शुकी प्रिय वियोग में दम तोड़ दी इस बात से सीता ~~से सीता~~ का मन बहुत दुःखी हुआ और वह सोचने लगी–

" मैं जो शाश्वत वियोगिनी हूँ
उसका कारण क्या शुकी वही?
क्या मैं अभिशाप-भोगिनी हूँ।"

काव्य के चतुर्थ सर्ग में सीता और विरजा की संवाद आया है। यह संवाद अपने-आप में विशेष स्थान रखता है, क्योंकि कवि ने इसमें दोनों ~~की~~ के व्यक्तित्व को प्रकट कर दिया है। इसके साथ ही कवि ने अपने उद्देश्य को ~~स~~ स्थापित कर दिया है। प्रसंग इस प्रकार है।

गंधफली हिरणी अब स्यानी हो गयी है। उसके भीतर देह गंध का जागरण हो गया है। इस कारण वह विशेष आकुल-व्याकुल रहने लगी है। इसी परिप्रेक्ष्य में सीता और विरजा संवाद की योजना हुई है। विरजा गंधफली हिरणी को स्वयंवरा कहती है। इस बात को सीता भी सही मानती है। इसलिए वह कहती है अभी तो इसका ह्यान्त नहीं है इस कारण इसे विदा कौन करेगा पर इसके मन को तोड़ना ठीक नहीं; इसे आशीर्वाद देना चाहिए–

" सखि सीते! आज बहन मैं
और तुझे माता बनना होगा
दे केवल आशीष, मुझे–
कुछ कटु-मधु भी कहना होगा।"

इसके बाद विरजा गंधफली नर-नारी संबंध

की बातें करने लगती है। इसी संदर्भ में गांधारी को कंचन मृग से बचने की सलाह देती है। और सीता भी उसे रोक कर कहती है—

"हूँ मंदभागिनी उपेक्षिता
फिर भी कैसे यह बात कहूँ
नर निंदनीय - नारी होकर
कैसे मैं यह अपवाद सहूँ।।"

आगे यह कहती है कि प्रेम-पुकार भर है। इस बात की पुष्टि इन पंक्तियों से की जाती है—

आकाश पुरुष नारी धरती
जब पुरुष स्नेह बरसाता है
तब नारी के जीवन के मधुवन में-
वसंत आ जाता है।।

इसके बाद विरजा प्रसंग बदल देती है और बताती है कि राम अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ कर रहे हैं। सीता की जगह पर उन्होंने सोने की सीता बनाई है। अब सीता कहती है कि नारी केवल डाली के फूल ही नहीं होती वह फलवंती होकर फल देने वाली विराट पेड़ भी है। फूल बनकर देवताओं के चरण पर चढ़ना महान है पर, इससे महान फल बनकर कल्याणी बन जाना और सुन्दर है। इसी क्रम में सीता विरजा को एक सुमधुर गीत गाने को कहती है। विरजा एक करुण गीत गाती है; फिर लव-कुश आ जाते हैं।

हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि 'उत्तर सीता चरित' काव्य में सीता विरजा संवाद में एक ओर सहजता है। स्वाभाविकता है, तो दूसरी ओर नर-नारी के गंभीर प्रश्न उठे गये हैं। जो मानस मन को अपूर्व विचार और दृष्टि देते हैं।

Scanned with CamScanner